डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था

Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

दिनांक : 15 अगस्त 2017

शोक संदेश

हिंदी ही नहीं भारतीय भाषाओं के शीर्षस्थ कवियों में से एक डॉ. चंद्रकांत देवताले का 14 अगस्त 2017 की मध्यरात्रि नई दिल्ली में लंबी बीमारी के पश्चात् देहावसान हो गया। विगत 65 वर्षों से रचनात्मक दुनिया में निरंतर सक्रिय चंद्रकांत देवताले गिनती के कुछ उन कवियों में से थे जिनके कवि व्यक्तित्व और निजी जीवन में किसी स्पष्ट फाँक की तलाश कर पाना बेहद मुश्किल है।

चंद्रकांत देवताले का जन्म 7 नवंबर 1936 को जौलखेड़ा जिला बैतूल, मध्य प्रदेश में हुआ था। हिंदी साहित्य में एम.ए. तथा मुक्तिबोध की कविता पर पी–एच. डी. की उपाधि प्राप्त डॉ. देवताले ने 1961 से 1996 तक मध्य प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। *हड्डियों में छिपा ज्वर, दीवारों पर खून, लकड़बग्घा हँस रहा है, रोशनी के मैदान की तरफ, आग हर चीज़ में बताई गई थी, पत्थर की बेंच, इतनी पत्थर रोशनी, उजाड़ में संग्रहालय, पत्थर फेंक रहा हूँ, आकाश की जात बता भइया, कवि ने कहा, प्रतिनिधि कविताएँ* आदि उनके प्रमुख कविता–संग्रह हैं। डॉ. देवताले ने दिलीप चित्रे की कविताओं और संत तुकाराम के अभंगों का मराठी से हिंदी अनुवाद भी किया था जो पुस्तकाकार प्रकाशित हैं। उन्हें मध्य प्रदेश शासन का शिखर सम्मान, माखन लाल चतुर्वेदी कविता पुरस्कार, पहल सम्मान, भवभूति अलंकरण, कविता समय सम्मान, कुसुमाग्रज राष्ट्रीय सम्मान, रचना समय सम्मान तथा *पत्थर फेंक रहा हूँ* कविता–संग्रह के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2013) सहित अनेक पुरस्कारों से विभूषित किया गया था।

डॉ. चंद्रकांत देवताले के निधन से भारतीय साहित्य जगत् को अपूरणीय क्षति हुई है। साहित्य अकादेमी डॉ. चंद्रकांत देवताले के प्रति अपनी गहरी संवेदना और श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भी डॉ. चंद्रकांत देवताले के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त की है। उन्होंने कहा है कि डॉ. चंद्रकांत देवताले ने भारतीय साहित्य की श्रीवृद्धि की है, उन्होंने कई पीढ़ियों के रचनाकारों को प्रभावित किया है; डॉ. देवताले के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

(के. श्रीनिवासराव)